नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

अमेरिका ईरान : संघर्ष को टाला जाना चाहिए

अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ता तनाव एक बार फिर दुनिया को अस्थिरता के दौर में धकेल रहा है. वर्ष 2026 की शुरुआत से ही दोनों देशों के बीच बयानबाजी, प्रतिबंधों की धमकियां और सैन्य गतिविधियां तेज हुई हैं. यदि यह टकराव युद्ध में बदलता है, तो उसका प्रभाव केवल पश्चिम एशिया तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरी वैश्विक व्यवस्था को झकझोर देगा. ऐसे समय में भारत जैसे उभरते वैश्विक शक्ति केंद्र के लिए संतुलित, व्यावहारिक और दूरदर्शी रणनीति अनिवार्य हो जाती है.

इस संकट की जड़ में सबसे बड़ा मुद्दा ईरान का परमाणु कार्यक्रम है. ट्रंप प्रशासन एक नए और कठोर समझौते की मांग कर रहा है, जिसमें परमाणु कार्यक्रम के साथ-साथ ईरान के मिसाइल कार्यक्रम पर भी नियंत्रण शामिल हो. दूसरी ओर, ईरान पुरानी शर्तों पर ही वापसी चाहता है. जेनेवा में चल रही वार्ताएं ठप पड़ी हैं और अविश्वास की खाई गहरी होती जा रही है. यह गतिरोध केवल कूटनीतिक विफलता नहीं, बल्कि संभावित सैन्य संघर्ष की पृष्ठभूमि भी तैयार कर रहा है.

दूसरा कारण ईरान के भीतर बढ़ता घरेलू असंतोष है. खराब अर्थव्यवस्था, बेरोजगारी और मानवाधिकारों के प्रश्नों पर दिसंबर 2025 से व्यापक विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं. अमेरिका ने इन प्रदर्शनों पर ईरानी सरकार की कार्रवाई की निंदा की है और अप्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप की चेतावनी भी दी है. इतिहास गवाह है कि जब आंतरिक अस्थिरता और बाहरी दबाव एक साथ बढ़ते हैं, तो स्थिति विस्फोटक हो जाती है.

तीसरा और सबसे खतरनाक आयाम सैन्य घेराबंदी का है. अमेरिका ने मध्य पूर्व में दो विमानवाहक पोत तैनात किए हैं, जबकि ईरान ने होर्मुज जलडमरूमध्य में सैन्य अभ्यास शुरू कर दिया है. यह वही जलमार्ग है जिससे दुनिया की बड़ी तेल आपूर्ति गुजरती है. यदि यहां तनातनी बढ़ती है या मार्ग अवरुद्ध होता है, तो कच्चे तेल की कीमतें 120 से 150 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच सकती हैं. इससे वैश्विक मुद्रास्फीति बढ़ेगी, परिवहन लागत में उछाल आएगा और सप्लाई चेन बाधित होगी. परिणामस्वरूप विश्व अर्थव्यवस्था मंदी की चपेट में आ सकती है.

भारत के लिए यह स्थिति दोहरी चुनौती लेकर आई है. एक ओर, ईरान में हजारों भारतीय छात्र और तीर्थयात्री मौजूद हैं, जिनकी सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है. सरकार द्वारा जारी एडवाइजरी और संभावित निकासी योजना इस दिशा में जरूरी कदम हैं. दूसरी ओर, भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयात करता है. यदि तेल की कीमतें अनियंत्रित हुईं, तो घरेलू महंगाई, राजकोषीय संतुलन और विकास दर पर सीधा असर पड़ेगा.

भारत की कूटनीतिक रणनीति अब तक संतुलन पर आधारित रही है. वह अमेरिका के साथ अपने रणनीतिक और व्यापारिक संबंधों को मजबूत बनाए हुए है, वहीं ईरान के साथ ऐतिहासिक और भौगोलिक संबंधों को भी बनाए रखना चाहता है. रूस, सऊदी अरब और यूएई जैसे देशों से वैकल्पिक ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करने के प्रयास इस बात का संकेत हैं कि भारत संभावित संकट के लिए तैयारी कर रहा है. यही रणनीतिक स्वायत्तता भारत की विदेश नीति की पहचान भी है. कुल मिलाकर अमेरिका और ईरान के बीच युद्ध केवल दो देशों की जंग नहीं होगा, बल्कि वैश्विक अस्थिरता का कारण बनेगा. ऐसे समय में भारत को शांति, संवाद और संतुलन की आवाज बुलंद करनी चाहिए.

कूटनीतिक परिपक्वता, ऊर्जा विविधीकरण और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करके ही भारत इस उथल-पुथल के दौर में स्वयं को सुरक्षित रख सकता है. यही समय की मांग है और यही दूरदर्शी नेतृत्व की कसौटी भी. जो भी हो इस संघर्ष को हर हाल में रोका जाना चाहिए.

दिल्ली का एआई गौरव और राष्ट्रीय क्षमता का लक्ष्य

हरदीप एस पुरी

जब पाणिनि ने बोली जाने वाली भाषा की अव्यवस्था को एक संक्षिप्त, गणनीय व्याकरण में परिवर्तित किया, तो उन्होंने एक बात साबित की, जो आज भी प्रासंगिक है: बुद्धिमत्ता सबसे शक्तिशाली तब होती है, जब इसे संरचना के रूप में व्यक्त किया जाता है. नालंदा इस सहज प्रवृत्ति को संस्थानों तक ले गया और बहस करने, संरक्षित करने और ज्ञान को सीमाओं के पार प्रसार करने के तरीके विकसित किए. भारत एआई इम्पैक्ट समिट 2026 की मेजबानी करने का भारत का निर्णय उसी सभ्यतागत भावना से प्रेरित है, क्योंकि तकनीक में अगली छलांग उन प्रणालियों के बारे में है, जो सीख सकती हैं, तर्क कर सकती हैंऔर बड़े पैमाने पर कार्य कर सकती हैंऔर दुनिया ऐसे भविष्य के बारे में सोच नहीं सकती, जिसमें केवल कुछ देश यह तय करें कि ये प्रणालियाँ कैसे बनाई जाएँगी.

> प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में, वैश्विक एआई शिखर सम्मेलन श्रृंखला की मेजबानी करने वाला पहला वैश्विक दक्षिण देश केवल एक संवाद आयोजित नहीं कर रहा था, बल्कि उसने यह स्पष्ट कर दिया कि वह किन शर्तों पर प्रतिस्पर्धा करना चाहता है : एक दिल्ली घोषणा पत्र, जो एआई शासन के नियमों को फिर से तैयार करता है, डिजिटल अवसंरचना, जो दुनिया में वास्तविक समय पर होने वाले लगभग आधे भुगतानों को संसाधित करती है, सैकड़ों अरबों की निवेश प्रतिबद्धताएं, पूरी तरह से नए सिरे से बनाए गए संप्रभु मॉडल, और एआई युग की आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षा संरचना में प्रवेश. पाणिनि का सबक कभी जटिल नहीं था. संरचना ही बुद्धिमत्ता है. भारत अब उस संरचना का निर्माण कर रहा है.

पिछले सप्ताह भारत मण्डपम में आयोजित यह शिखर सम्मेलन, एक वैश्विक दक्षिण राष्ट्र द्वारा आयोजित पहला वैश्विक एआई शिखर सम्मेलन थाऔर किसी भी पूर्व आयोजन में इस स्तर की भागीदारी नहीं देखी गयी: 20 से अधिक राष्ट्राध्यक्ष, 60 मंत्री, 100 से अधिक देशों के 500 से अधिक एआई दिग्गज और विषय-आधारित दस पवेलियनों में 300 प्रदर्शक. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में, भारत अपनी स्वयं की एक संगठनात्मक सोच प्रस्तुत कर रहा है: डेटा पर संप्रभुता, डिज़ाइन के अनुसार समावेशऔर स्वाभाविक जवाबदेही. देश वैश्विक पूंजी को इन शर्तों पर यहाँ निवेश करने के लिए आमंत्रित कर रहा है.

प्रधानमंत्री के एम.ए.एन.ए.वी विजन में इस विचार की स्पष्ट अभिव्यक्ति हुई है: नैतिक पाबंदी, जवाबदेह शासन, डेटा पर संप्रभुता, ताकि ज्ञान के कच्चा माल का उस रूप में निष्कर्षण न किया जाए जैसे कभी वस्तुओं का किया जाता था; व्यापक पहुंच, ताकि लाभ मध्य प्रदेश के किसान तक उतने ही निश्चित रूप से पहुंचे, जितना बेंगलुरु के इंजीनियर तकऔर कानूनी वैधता, ताकि हर प्रयुक्त प्रणाली लोकतांत्रिक निरीक्षण के प्रति जवाबदेह बनी रहे. उनकी अवधारणा एआई को खुला आकाश देने की है, जबकि नियंत्रण मानव हाथों में रखा जाना चाहिए. यह अवधारणा एक ऐसी रेखा खींचती है, जिसे कई उन्नत अर्थव्यवस्थाएं खींचने में हिचकिचा रही हैं.

अब इन सिद्धांतों का बहुपक्षीय महत्व है, जो शिखर सम्मेलन में अपनाई गई दिल्ली घोषणा के माध्यम से सामने आया, और इसे पहले से ही वैश्विक दक्षिण से आने वाली पहली प्रमुख एआई शासन रूपरेखा कहा जा रहा है. इस घोषणा की दृष्टि विकास-उन्मुख है, जिसका केंद्र तकनीकी-कानूनी दृष्टिकोण है और जो कठोर अनुपालन की तुलना में लचीली पाबंदियों को प्राथमिकता देता है. यह वैश्विक सहयोग को तीन स्तंभों पर व्यवस्थित करता है: लोग, पृथ्वी और प्रगति. भारतजेन जैसा जनसंख्या के पैमाने पर आधारित समाधान, जो 22 भारतीय भाषाओं का समर्थन करता है और उस वास्तविकता को संबोधित करता है कि दुनिया का अधिकांश भाग अंग्रेज़ी में काम नहीं करता. भारत के अपने सब्सिडी वाले जीपीयू एक्सेस (?65 प्रति घंटा) पर आधारित एक प्रस्तावित वैश्विक कंप्यूट बैंक प्रवेश बाधाओं को हर जगह कम करता है. घोषणा में डेटा संप्रभुता पर जोर दिया गया है, जो सीधे एआई निष्कर्षणवाद को चुनौती देता है: एक पैटर्न, जिसमें विकासशील देशों से डेटा संग्रहित किया जाता है ताकि मॉडल को प्रशिक्षित किया जा सके. बाद में इन देशों को इसी मॉडल के लिए भुगतान करना पड़ता है.

पिछले दशक के कार्यान्वयन ने इस रूपरेखा को विश्वसनीयता दी है, क्योंकि यह सरकार एआई तक किसी श्वेत पत्र के माध्यम से नहीं, बल्कि किसी भी लोकतांत्रिक देश द्वारा शुरू किये गये सबसे महत्वाकांक्षी डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना कार्यक्रम के जरिये पहुँची है. यूपीआई ने 2025 में 228 बिलियन से अधिक लेन-देन संसाधित किए, जिनका मूल्य लगभग 3.4 ट्रिलियन डॉलर था, जो दुनिया के वास्तविक समय पर कुल डिजिटल भुगतान का लगभग आधा हैऔर यह वैश्विक स्तर पर वीसा द्वारा संसाधित किये गये कुल लेन-देन से भी अधिक है.

(लेखक केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हैं)

ग्वालियर चंबल डायरी

सियासी खींचतान बेड़ा गर्क कर रही सवासौ साल पुरानी विरासत का

हरीश दुबे

ग्वालियर मेला का आगाज देश के गृह मंत्री अमित शाह के करकमलों से हुआ था, हालांकि शाह ने मेला परिसर में ही आयोजित किए गए एक अन्य सरकारी इजलास में मेला का वर्चुअली शुभारंभ किया था. सीएम सहित सूबे के दीगर बड़े लीडरान और मिनिस्टरों की भी इस जलसे में मौजूदगी रही थी. लेकिन इसके उलट मेला का समापन आज बेहद सादे समारोह में सुंदरकांड के पाठ के साथ हो गया, मिनिस्टरों या बड़े नेताओं को बुलाए बगैर सिर्फ मेला के आयोजन से जुड़े रहे अफसरों की मौजूदगी में.

इस बार मेला में शानदार शोरूम और बेहतर प्रदर्शन करने वाले व्यापारियों को इनाम किताब भी नहीं दिए गए. दो महीने तक मेला की शान बढ़ाने में जी जान लगा देने वाले व्यापारियों को इस बार कशिश है कि कोराना काल से ही महज औपचारिकता और अवनति की ओर बढ़ चले ग्वालियर मेला का शुभारंभ भले ही विधिवत रूप से मेला मंच पर नहीं हो सका लेकिन मेला का समापन समारोह तो भव्यता के साथ करना था. एक दौर वह था जब मेला का शुभारंभ करने के लिए वजीरे आला या माधवराव सिंधिया ग्वालियर तशरीफ लाते थे. बाद के वर्षों में कई मर्तबा माधवराव सिंधिया आते रहे, इस परंपरा का निर्वाह ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी किया. लेकिन जब सिंधिया के समर्थन से शिवराज सिंह की सूबे की सत्ता में दोबारा वापसी हुई, तभी से अन्य निगम मंडलों की तरह ग्वालियर मेला प्राधिकरण भी राजनीतिक रस्साकसी का शिकार हो गया है. पिछले छह साल से मेला प्राधिकरण बोर्ड का गठन गुटीय राजनीति में अटका हुआ है. सूबे की सत्ता में बैठे सियासतदां सिंधिया के गृहनगर के इस आयोजन में परोक्ष दखल देने से बचते रहे हैं. चूंकि ग्वालियर मेला पूरी तरह राज्य शासन का मसला है, लिहाजा सिंधिया ने भी मेला के मामलात से दूर रहना ही उचित समझा है. यह कहने में कोई गुरेज नहीं कि ग्वालियर मेला अपनी सौ साल पुरानी शानोशौकत खोता जा रहा है, मेला प्राधिकरण बोर्ड का गठन कर यदि मेला की रौनक वापस लौटाने के लिए दूरदर्शी कदम नहीं उठाए गए तो ग्वालियर का यह विराट आयोजन भी तानसेन समारोह की तरह फॉर्मेलिटी बनकर रह जाएगा.

सदर की ताजपोशी के अर्धवर्ष का जश्न...

ग्वालियर कांग्रेस में नेतृत्व परिवर्तन को छह माह पूरे हो गए. नए जिला अध्यक्ष सुरेंद्र यादव के कार्यकाल का अर्धवर्ष पूरा होने पर पार्टी दफ्तर पर हारफूल मालाओं, मिष्ठान और तारीफ के कशीदों के साथ जश्न मनाया गया. भाजपा किसान मोर्चा के महामंत्री सौरभ सिंह को कांग्रेस की सदस्यता दिलाकर सुरेन्द्र यादव ने अपने खाते में एक और उपलब्धि जोड़ी. वैसे यह सच है कि नए सदर ने संगठन को बूथ, वार्ड, ब्लॉक और जिला स्तर पर मजबूत करने की दिशा में कई कदम उठाए हैं. कुछेक साल से रूठकर घर बैठ गए पुराने नेताओं को मुख्य धारा में वापस लाने के लिए भी मुहिम चलाई जा रही है.

कटारे के अगले कदम से बदल सकती है अटेर की सियासत

हालांकि विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष के पद से अचानक इस्तीफा देकर सियासी हलकों में सरगर्मी पैदा करने वाले हेमंत कटारे ने खुद ही भाजपा में शामिल होने की अटकलों पर यह कहते हुए विराम लगा दिया है कि वे पहले की तरह सदन से सड़क तक भाजपा को घेरेंगे और कांग्रेस उनके स्वर्गीय पिता सत्यदेव कटारे की विरासत है, जिसे वे किसी भी हाल में नहीं छोड़ेंगे लेकिन राजनीति के जानकारों का कहना है कि कहानी अभी खत्म नहीं हुई है और सभी विकल्पों को खुला रखा गया है. शिवराज के दूसरे कार्यकाल में उपनेता प्रतिपक्ष पद रहे भिंड के ही राकेश चौधरी ने जिस तरह उपनेता प्रतिपक्ष पद से इस्तीफा देकर पहले अपरोक्ष रूप से और फिर खुलकर भाजपा का दामन थाम लिया था, हेमंत कटारे वैसी जल्दबाजी करने के मूड में नहीं हैं, भिंड से चुनाव हारने के बाद राकेश चौधरी को अंततः कांग्रेस में वापसी करना पड़ी थी, लिहाजा अपने भविष्य के लंबे राजनीतिक कैरियर को देखते हुए कटारे 'वेट एण्ड वाच' की नीति पर चल रहे हैं. विधानसभा का महत्वपूर्ण दायित्व छोड़ने के बाद कटारे ने भाजपा विरोधी तेवर बनाए रखे हैं. वे गोमांस विवाद, इंदौर के भागीरथपुरा मामले, शंकराचार्य के अपमान और जहरीली हवा-दवा-पानी जैसे मसलों को हाउस में उठाकर भाजपा को घेरने की बात कर रहे हैं लेकिन चंबल के राजनीतिक पंडितों का कहना है कि विधानसभा चुनाव में अभी पौने तीन साल बाकी हैं, तब तक कटारे के विधानसभा क्षेत्र अटेर के समीप से बहने वाली चंबल नदी में बदलाव वाली कई नई लहरें उठ सकती हैं. अटेर भाजपा सरकार के पूर्व मंत्री अरविंद भदौरिया का पारम्परिक विधानसभा क्षेत्र है, कटारे के किसी भी नए सियासी कदम से भदौरिया के हित अहित प्रभावित होना तय है.

न्यायपालिका में भ्रष्टाचार का मुद्दा

> एनसीईआरटी की 8 वीं कक्षा की नई किताब में हमारे समाज में न्यायपालिका की भूमिका शीर्षक अध्याय में एक हिस्सा न्यायपालिका में भ्रष्टाचार पर भी है. कितने ही लोग इसके भुक्तभोगी हैं.

मुकदमों की बढ़ती तादाद से न्यायपालिका जूझ रही है. सुप्रीम कोर्ट में 81,000, उच्च न्यायालयों में 62,40,000 तथा जिला व कनिष्ठ अदालतों में 4,70,00,000 मामले बकाया हैं. इस वजह से न्याय में विलंब होना स्वाभाविक है. यदि न्यायालय के बाहर बीच बचाव या आपसी सुलह से कुछ विवाद हल होने लगे तो मामलों की तादाद कम हो सकती है. सुप्रीम कोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस बी. आर. गवई ने जुलाई 2025 में कहा था कि न्यायपालिका में भी भ्रष्टाचार व कदाचार के मामले सामने आए हैं. इससे जनता के विश्वास पर नकारात्मक असर पड़ता है. इस विश्वास को बहाल करना होगा.

लोकतंत्र में पारदर्शिता व जवाबदेही आवश्यक है. एनसीईआरटी की 8 वीं कक्षा की नई किताब में हमारे समाज में न्यायपालिका की भूमिका शीर्षक अध्याय में एक हिस्सा न्यायपालिका में भ्रष्टाचार पर भी है. कितने ही लोग इसके भुक्तभोगी हैं. न्यायाधीश भी इसी समाज से आते हैं. यदि समाज में गुण-दोष हैं तो उन पर भी इसका प्रभाव पड़ सकता है. यह व्यक्ति के चरित्र पर निर्भर करता है कि वह आदर्शवादी हैं या प्रलोभन में पड़ जाता है. जहां तक मुकदमों की बड़ी तादाद का सवाल है, पर्याप्त संख्या में जजों का नहीं होना, जटिल कानूनी प्रक्रिया तथा कमजोर ढांचा इसके लिए जिम्मेदार है. गुजरात में तो तेजी से मामले निपटाने के लिए रात्रि में चलने वाली अदालत का भी प्रयोग किया गया. कहा जाता है कि जमानत नियम है और जेल अपवाद है, लेकिन फिर भी हजारों विचाराधीन कैदी ऐसे हैं, जो वर्षों से जेल में हैं, क्योंकि उनकी जमानत लेने कोई आगे नहीं आया.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

क्यों करते व्यर्थ की किट-किट मणिशंकर कांग्रेस में मिसफिट

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'कुछ भूले-बिसरे नेता अपना अस्तित्व जताने के लिए व्यर्थ की बयानबाजी करते हैं ताकि उन पर ध्यान जा सके. मणिशंकर अय्यर हों या सैम पित्रोदा, सभी का यही हाल है. 84 वर्ष के मणिशंकर ने बयान दिया कि मैं गांधीवादी, नेहरूवादी और राजीववादी हूं, लेकिन राहुलवादी नहीं! राहुल मुझसे काफी कम उम्र के हैं और राजनीतिक जीवन में मेरी उनसे दूरी भी काफी है.' हमने कहा, 'उनका यह बयान एक तरह का फ्रस्ट्रेशन है. जब पार्टी में कोई पूछता नहीं और हाशिए पर डाल दिए गए हैं तो पुरानी यादें ताजा कर रहे हैं कि वह बचपन में महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित थे. फिर नेहरू के आदर्शों का उन पर असर हुआ. इंदिरा गांधी का कोई उल्लेख न करते हुए मणिशंकर ने राजीव गांधी को याद किया, जिन्होंने उन्हें मंत्री बनाया था. उनके बयान का उद्देश्य खुद को राजनीति व पार्टी में सीनियर, अनुभवी जबकि राहुल गांधी को जूनियर या नौसिखिया बताना है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, आपको याद होगा कि जब मणिशंकर अय्यर ने प्रधानमंत्री मोदी के लिए 'नीच' शब्द का प्रयोग किया था तो कांग्रेस ने उनसे दूरी बना ली थी. भारतीय विदेश सेवा में रह चुके और अंग्रेजी में सोचने वाले मणिशंकर को अंग्रेजी के 'मीन मेंटलिटी' शब्द का हिंदी अनुवाद ओछी मानसिकता नहीं सूझा, तो उन्होंने नीच कह दिया था. अय्यर व शशि थरुर जैसे नेता अंग्रेजी में पक्के और हिंदी में कच्चे हैं. अय्यर की शिकायत है कि उन्हें 22 वर्षों से एआईसीसी में बोलने नहीं दिया गया.'

हमने कहा, 'कांग्रेस के मीडिया व पब्लिसिटी विभाग के प्रमुख पवन खेडा ने कहा कि मणिशंकर अय्यर अब पार्टी में नहीं हैं. हमारे पास काफी बुजुर्ग नेता हैं जो हमें सिरदर्द देते रहते हैं.' पड़ोसी ने कहा, 'कांग्रेस पार्टी की हालत उस पुराने चाकू के समान है, जिसका कभी हैंडल बदल दिया जाता है, तो कभी सामने का धारदार हिस्सा, लेकिन भावना यही है कि चाकू वही 141 साल पुराना है.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12182

- डॉ. सागर खादीवाला

1		■	2	3	4		5
	■	6				■	
7	8	■	9			■	
10		11	■	■	■	12	
13			■	14			■
■		■	■		■	15	16
17	■	■	18		19	■	
20				■	21		

बाएं से दाएं

1. शहद (सं.) 2. गंध या महक देना, गमकना 6. पाठशाला, विद्यालय (उर्दू) 7. दीप्ति, चमक, शोभा 9. झुकने की क्रिया या भाव, नमस्कार 10. आटा छानने की छलनी 12. छाती, हृदय, मन 13. सिंचाई या यातायात के विचार से किसी नदी या जलाशय से निकाला गया जलमार्ग 14. पराजय, टूटना (उर्दू) 15. अनुरागी, प्रेमी, गवैया 18. पारा 20. परास्त, हारा हुआ 21. सलाख, सलाई

ऊपर से नीचे

1. रत्न और सोना (सं.) 2. कामदेव, वसंतकाल 3. अंत:पुर, जनानखाना (उर्दू) 4. मरघट 5. अस्वीकृत, अमान्य (उर्दू) 8. फसल के रूप में बोए जाने वाले तेल के पौधे 11. जल, पानी 12. बाल मूंडने का औजार 14. जाड़ा, शीतकाल (सं.) 16. छब्बीस मात्रा का एक छंद 17. वह शब्द या वाक्य जो किसी अनिष्ट की कामना से कहा जाए 18. गिरने अथवा गिराने का भाव या क्रिया, पत्ता 19. दस की संख्या

Solution 12181

को	ह	रा	■	प	क	वा	न
र	वा	■	द	र	ब	द	र
ना	दा	न	■	वा	■	■	पि
■	र	ह	गु	ज	र	■	शा
आं	■	ला	ल	■	ख	प	च
दो	■	■	ब	स	र	■	■
ल	व	■	द	वा	खा	ना	■
न	सा	व	न	■	व	जी	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में चिन्ताओं से छुटकारा मिलेगा, राज्य सम्मान की प्राप्ति होगी, गृहकार्य में व्यस्तता रहेगी, धन लाभ का योग है, मन में प्रसन्नता रहेगी, वर्ष के मध्य में यात्रा का योग है, व्यय में कमी तथा व्यापार में सुधार होगा, रोजगार में सफलता मिलेगी, भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ होगा, वर्ष के अन्त में व्यवहारकुशलता बढेगी, मित्र के कारण कार्यों में व्यवधान आयेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भाईयों से राजनैतिक लाभ होगा, घरेलू कार्यो में व्यस्तता रहेगी, धन लाभ का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यय में कमी तथा व्यापार में उहापोह की स्थिति निर्मित होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को सहयोग मिलेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वभाव से शांत, गंभीर तथा महत्वाकांक्षी, अपने कार्यों के प्रति सजग रहने वाला, ईमानदार एवं क्रोधी होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी, कला, साहित्य के क्षेत्र में अच्छी रूचि रहेगी, माता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

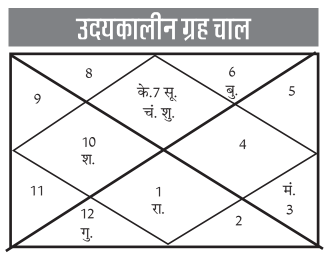

मेष- व्यापारिक सौदेबाजी लाभकारी रहेगी, पारिवारिक आयोजन से प्रसन्नता होगी, पद प्रतिष्ठा रहेगी, अनावश्यक विवाद न बढ़ायें. नया समाचार मिलेगा.

वृषभ- प्रियजन की मुलाकात उपयोगी रहेगी, स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें, व्यर्थ के विवादों से दूर रहना हितकर रहेगा, खर्च की पूर्ति होगी.

मिथुन- दूसरों की बातों में आकर अपनों से दूरिया बना लेगें, प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के आसार हैं, शारीरिक सुख एवं पारिवारिक चिन्ता दूर होगी, यश मिलेगा.

कर्क- उन्नति के लिये अवसर मिलेगें, निजी मामलों में उत्साह बना रहेगा, किये गये प्रयासों की प्रशंसा होगी, सोचे हुये कार्य में गति आयेगी.

सिंह- झूठ बोलकर लोग भ्रमित कर सकते हैं, हक के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, स्वास्थ्य में सुधार होगा, कुछ नये समाचारों की प्राप्ति होगी.

कन्या- कोर्ट कचहरी के मामले सुलझेगें, सामूहिक कार्यों में सबकी सहमति से कार्य करें, राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी, महत्वपूर्ण दायित्वों की पूर्ति होगी.

तुला- भय से छुटकारा मिलेगा, मित्रों से कहासुनी का दुख होगा, कामकाजी यात्रा का योग है, महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मुलाकात होगी.

वृश्चिक- उच्च अध्ययन के अच्छे परिणाम आयेगें, सुख सुविधा पर खर्च होगा, अनावश्यक कार्यो में धन खर्च होगा, आय में कमी हो सकती है.

धनु- तनाव दूर होगा, विपरीत परिस्थिति में समझौता करना पड़ सकता है, पराक्रम में वृद्धि होगी, नये कार्यो के प्रति रूचि रहेगी. पदोन्नति का योग है.

मकर- जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, वित्तीय मामले सुलझेगें, व्यापार व्यवसाय की रूपरेखा बनेगी, अपव्यय पर नियंत्रण रखकर कार्य करें.

कुम्भ- बुजुर्गों के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, जीवनसाथी के व्यवहार से दुख होगा, सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी, पदोन्नति का योग है.

मीन- मित्रों की मदद से अधूरे कार्य पूरे होगें, श्रम साध्य कार्यों में समय व्यतीत होगा, दूर गये मित्र के संबंध में शुभ समाचार प्राप्त होगा.

पंचांग

रा.मि. 07 संवत् 2082 फाल्गुन शुक्ल दशमीं गुरूवासरे रात 12/36, मृगशिरा नक्षत्रे दिन 12/0, प्रीति योगे रात 10/32, तैतिल करणे सू.उ. 6/17, सू.अ. 5/43, चन्द्रचार मिथुन, शु.रा. 3,5,6,9,10,1 अ.रा. 4,7,8,11,12,2 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

फाल्गुन शुक्ल दशमीं को मृगशिरा नक्षत्र के प्रभाव से गेहूं, जौ, चना, सरसों, तिल, तेल, मटर, अरंडी, रूई, सूत, कपास आदि में तेजी होगी, नारियल, सुपारी, बादाम, दाख, छुहारा के भाव में साधारण नरमीं का रूख रहेगा, बारदाना के भाव में घट बढ़ रहेगी. भाग्यांक 4821 है.

SUDOKU 7314

					1	4		
	9					5	8	
			7	9				
			2				6	7
4								3
5	8				9			
				8	5			
	7	6					1	
		9	3					

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7313

7	8	9	2	3	1	6	5	4
3	2	4	6	5	9	7	8	1
6	5	1	8	4	7	2	9	3
5	1	7	3	9	8	4	6	2
4	6	8	5	1	2	9	3	7
9	3	2	4	7	6	8	1	5
1	4	6	9	2	3	5	7	8
2	9	3	7	8	5	1	4	6
8	7	5	1	6	4	3	2	9